दयानंद स्वर्णकार का कुआँ

बिहार के सुपौल जिले के सुपौल प्रखंड में रामदत्तट्टी मौजा के दलित टोला में दयानंद स्वर्णकार के दरबाजे पर अति प्राचीन कुआं अवस्थित है। इसको बनाए हुए करीब 200 वर्ष हो चुके हैं। ग्रामीण बताते हैं कि 10–15 वर्ष पूर्व तक लोगों की प्यास बुझाने व अन्य कार्यों में कुआं का उपयोग हो रहा था, लेकिन धीरे–धीरे चापाकल का व्यवहार ने कुआं से अरुचि पैदा कर दिया। मेघ पाईन अभियान के कार्यकर्ता अपने कार्य के दैरान जीर्ण–षीर्ण स्थिति में कुआं को देखा। इस स्थिति पर कार्यकर्ता ने कुआं के मालिक दयानंद स्वर्णकार और लोगों से बातें की। कुआं के महत्व को रेखांकित किया। लगातार बातचीत से लोगों में कुआं के प्रति चेतना जगी। साथ ही इस जीर्ण–षीर्ण कुएं के जिर्णोद्धार की बात भी जोर पकड़ने लगी। कुआं चूंकि पूर्ण क्षतिग्रस्थ हो चुका था। इसलिये मरम्मत में अधिक रुपये की आवष्यकता थी।

मेघ पाईन अभियान पानी की बुनियादी जरुरत पर कार्य करती है। शुद्ध पेयजल सबों को हमेषा उपलब्ध हो, यही लक्ष्य सामने है। इस संदर्भ में परंपरागत जल स्त्रोतों जैसे– कुआं, तालाब, नदी का संरक्षण भी कार्यक्रम में सम्मिलित है। मेघ पाईन अभियान जिसका कार्यान्वयन यहां की स्थानीय संस्था ग्राम्यषील करती है के कार्यकर्ताओं ने उन्हें आर्थिक मदद का वचन दिया। क्योंकि मेघ पाईन अभियान ने अपने तृतीय फेज में 5 ग्रामपंचायत के 10 कुआं पर 100000/रुपये खर्च करने का मंषा बनाई थी, ऐसे कुआं को चिन्हित करना था, जो समाज के लिये अपेक्षाकृत अधिक उपयोगी है। जिसके रख–रखाव के वास्ते समुदाय तैयार हो। तथा कुएं के मरम्मती हेतु आवष्यक राषि एक तिहाई ग्रामीण समुदाय भुगतान करें, जिसमें उनका श्रम भी सम्मलित था।

समुदाय ने आपस में बैठक कर निर्णय लिया कि इस कुआं को मरम्मत कर लिया जाय। मेघ पाईन अभियान कार्यकर्ताओं ने भी बैठक में भाग लिया। उन्हें इस कार्य हेतु हस्ताक्षरित व निषान किया हुआ आग्रह पत्र प्राप्त हुआ।

मेघ पाईन अभियान के अभियंता श्री अरविन्द तिवारी ने इस कुआं का पैमाईस कर एक बजट तैयार किया। लेकिन आपत्ति जनक होने की बजह से कुएं का पुनः बजट तैयार किया गया, क्योंकि कुआं ज्यदा टूटा हुआ था।

समयानुसार मेघ पाईन अभियान ने कुएं निर्माण का अपना एक मॉडल विकसित किया, जिसमें कुएं को बाढ़रोधी बनाने के लिये उनकी उँचाई को बढ़ाना, पानी निकासी के

लिये नाला, पानी खिंचने के लिये ढेकुल व कड़ी तथा कुएं के साथ बैठने के बास्ते बेंच का निर्माण समिलित है।

मेघ पाईन अभियान 2009–2010 में पांच पंचायत के एक–एक कुआं का जिर्णोधार किया है। उनमें एक कुआं रामदत्तपट्टी के दलित टोले का भी है।

इसे मेघ पाईन अभियान के कार्यकर्ताओं नें अपनी देख रेख में अभियंता, स्थानीय कारीगर, मजदूर व ग्रामीणों के सहयोग से भव्य रुप में तैयार कर लिया गया है।